403
Н 76

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 403

॥ ॐ ॥

गांधी का तीर

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

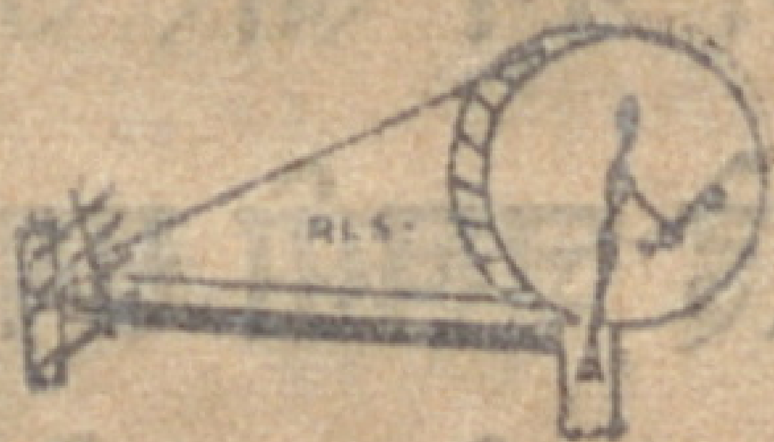

लेखक राम कवि

प्रकाशक-पं० रामप्रसाद गौड़ वैद्य भूषण
स्वामी स्टोर्स अलीगढ़

प्रथम बार २०००   मूल्य)॥

रामेश्वर प्रेस अलीगढ़।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 403
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

891.431
R14G

गाँधी का तीर

चरख़ा

तीरे चरख़ा कर रहा है वार लेकिन दूर से ।
दुश्मनों के होरहाहै पार लेकिन दूर से ॥
तीर तकले का है यह दिलदोज़ बांका बेगुमाँ ।
चश्मे बदबीं में चुभे बन ख़ार लेकिन दूर से ॥
इसकी ज़द से होरहे ज़खमी समन्दर पार तक ।
मारता है यह ग़ज़ब की मार लेकिन दूर से ॥
कहते हैं काटेंगे छीनेंगे तुम्हारी रोटियां ।
हमको घुड़की दे रहे खूंख़ार लेकिन दूर से ॥
वैसे तुम मालिक हो लेकिन मालको छूना नहीं ।
इसका मतलब है कि करलो प्यार लेकिन दूरसे ॥
इतनी बेख़ौफ़ी हुईहै इसलिये हासिल मुझे ।
होगया है रामका दीदार लेकिन दूर से ॥

गाँधी गुण गान

फूलों का सार जानसे प्यारा है गांधी ।
गुलशन है हिन्द फूल हज़ारा है गांधी ॥
चहुँओर उसकी कीर्त्ति की फैली सुगन्ध है ।
इत्रों की शीशियों का पिटारा है गांधी ॥
हिन्दी फ़क़त है वह न है हिन्दू न मुसलमां ।
हर शख्स जानता है हमारा है गांधी ।
बत्तीस कोटि बंधुओं की दाहिनी भुजा ।
भारत मही की आंख का तारा है गांधी ।
निश्शस्त्र भारतीयों की है एक मात्र ढाल ।
बे आसरों की आस सहारा है गांधी ॥
अवतारथे दया के दयानन्द बुद्ध जिन ।
उनकी जगह पै हरि ने उतारा है गांधी ॥
जपते हैं नाम लोग पयोनिधि के पार भी ।
मोचन को पाप गङ्ग की धारा है गांधी ॥
बन्धन विमुक्त करने को भारत मही के राम ।
तज मुक्तधाम भूमि पधारा है गांधी ॥

भारत के फूल

हिन्द के गुलशन में सदहा क़िस्मके गुलगो खिले।
कब खिला ऐसा कोई गुल जैसे पंडित गोखिले ॥
एक था चम्पा कटीला दूसरा कोमल गुलाब ।
हाँ तिलक और गोखिले इक साथ कैसे दो खिले॥
गुरु दयानन्द और गांधी जागते ही खिलगये।
और कुछ जागे उठे कुम्हलाए सोये सो खिले ॥
थी हमारी बदनसीबी हाय ! वे मुरझा गये ।
लाजपत और दास गुल भारत चमन में जो खिले॥
गांधी मोती जवाहर मालवी नयडू पटेल ।
राम यहरंग दें सदा जो होखिले सो हो खिले ॥

स्वदेशी प्रतिज्ञा

हमारे हिन्द वालों के चलन सारे स्वदेशी हों ।
पढ़ें सब देशकी भाषा वचन सारे स्वदेशी हों ॥
लिखें हम गद्य या कविता सभी हो देशभाषा में ।
जो गावें गीत गायक जन भजनसारे स्वदेशी हों ॥
करें शोभित हमारे बाग़ को सबदेश के तरुवर ।

लगावें जो चमन उसमें सुमन सारे स्वदेशी हों ॥
बनावें कारखाने मिल तो हों सब हिन्द वालों के ।
रुई या सूत रेशम ऊन सन सारे स्वदेशी हों ॥
चलावें नारिनर चरखा बुनें फिर शौक से कपड़ा ।
हों देशी कार्यकर्त्ता माल धन सारे स्वदेशी हों ॥
जियें जब तक हमारी देह पर हो देश का खद्दर ।
किनारे राम गंगा के कफ़न सारे स्वदेशी हों ॥

जिज्ञासु का प्रश्न रामजी से:-

भारत के वे दिन लौट कर कभी आयेंगे कि न आयेंगे

रामजी का उत्तर जिज्ञासु से

सताये जायंगे वे भी किसी को जो सतायेंगे ।
धुनेंगे सर को रो रो कर किसीको जो रुलायेंगे ॥
कटाये वीर लाखों हाय थे उस जंग आज़म में ।
ख़बर क्या थी सिले में इसके रौलट ऐक्ट पायेंगे ॥
किये जो जुल्म डायर ने चमन जलियान वाले में ।
भला क्या हिंद वाले उस सितम को भूल जायेंगे ॥
अनेकों वीरवर जेलों में जैसे भूख से मारे ।
हमारी आह के तीरों की वेभी मार खायेंगे ॥

सितम करने कमीशन साइमन आया था भारत में।
किया मशहूर दुनियां में प्रतिज्ञा को निभायेंगे ॥
प्रथम ली भेंट आकर लाजपत से शेर भारत की।
हुआ तहरीर से ज़ाहिर कि फन्दे में फंसायेंगे ॥
हया इनको नहीं आती कपट का जाल खुलने पर।
यही रहती सदा कोशिश कि फिर २ कर फंसायेंगे ॥
लड़ाई छिड़ गई अब तो नहीं यह बन्द होसक्ती।
अहिंसक वीर गांधी के मज़ा रणमें चखायेंगे ॥
नमक क़ानून को तोड़ा विदेशी वस्त्र जलवाये।
बनी इंगलैंड की हरगिज़ न कोई शै मंगायेंगे ॥
किया है बन्द सिगरेट और मदिरा देश वीरोंनें।
नहीं मालूम अब यह वीर क्या २ कर दिखायेंगे ॥
सतालें जिस क़दर चाहें सितमगर पेट भर हमको।
सितम करके सितमगर ईशको क्या मुंह दिखायेंगे
जवानो जल्द जागो अब तुम्हारा वार आया है।
वही हैं वीर सच्चे जो वचन पूरा निभायेंगे ॥
डटे जब गांधी मोती जवाहर लाल मैदां में।
न क्यों फिर देश वीरों को छुड़ा जेलों से लायेंगे ॥

बँधे जब मालवी आज़ाद से जेलों के बन्धन में।
न क्यों फिर देश भारतके जटिल बन्धन छुड़ायेंगे॥
फँसे अब्बास तैयब शेरवानी शेर कठगर में।
न क्यों फिर तोड़ कठगर के परख़चे ये उड़ायेंगे॥
जुटी रणक्षेत्र में जाकर जुगल जोड़ी पटेलों की।
पटाके हाथ दिखलाकर निहत्थों को बचायेंगे॥
अड़े जिज्ञासु टोडर शिवचरन मलखान जेलों में।
न क्यों बुनियाद जेलोंकी वहां जाकर हिलायेंगे॥
अलापैगी सुरीले राग कोकिल नायडू देवी।
कफस के बन्द सारे एक दम ही टूट जायेंगे॥
हिलादेंगे सिंहासन इंद्रका भी सिंह नादों से।
हठीले वीर बाजा बेड़ियोंका जब बजायेंगे॥
ज़माना रंग बदलेगा हमारी धारणा यह है।
पुराने चैन के दिन हिंद में फिर लौट आयेंगे॥
विजय होगी हमारी देश यह आज़ाद फिर होगा॥
दयासे रामकी शुभ दिन हमारे लौट आयेंगे॥

अन्तिम प्रार्थना

हरिहर हिंद को आज़ाद करदे।
गुलामी से छुड़ाकर शाद करदे॥
चमन यह हिन्द का उजड़ा पड़ा है।
इसे सर सब्ज़ और आज़ाद करदे॥
उजाड़ा यह चमन जिन ज़ालिमोंने।
बदी उनकी खुदा बरबाद करदे॥
हुकूमत हिन्द की हासिल हो हमको।
बही में यह हमारी स्वाद करदे॥
जवाहरलाल है मोती का जैसा।
अनेकों ऐसी ही औलाद करदे॥

स्वामी रामानन्द सरस्वती
'राम' कवि
अलीगढ़

१२—१०—३०—